महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

मानविकी एवं भाषा संकाय

संस्कृत-विभाग

एम.फिल्/पी-एच.डी. प्रथम सत्र

प्रश्न पत्र- प्रथम

पाठ्यशीर्षक- शोध प्रविधि

कोड-SNKT 5001

उपशीर्षक : शोध की परिभाषा एवं उसके प्रकार

प्रस्तुत कर्ता

डॉ.बबलू पाल

सहायक आचार्य

संस्कृत- विभाग

शोध का स्वरूप

मनुष्य स्वभाव से ही एक जिज्ञासु प्राणी रहा है। उसकी जिज्ञासा का इतिहास अत्यन्त ही पुरातन है। उत्पत्ति काल से ही लौकिक और अलौकिक वस्तुओं के ज्ञान के प्रति उसकी प्रबल जिज्ञासा रही है। आध्यात्मिक जगत् से लेकर भौतिक जगत् तक मनुष्यों की जिज्ञासा का दर्शन भारतीय ज्ञान परम्परा में किया जा सकता है। यदि भारतीय ज्ञान परम्परा में दृष्टिपात करें तो ऋषियों ने अनेकों ऐसे तथ्यों का दर्शन किया है जिसके विषय में विज्ञान आज भी शोधरत है। आध्यात्मिक जगत् के अतिरिक्त भौतिक जगत् को भी उन्होंने जो दृष्टि दी है वह आज भी वैज्ञानिक व प्रासंगिक है। किन्तु वर्तमान प्रौद्योगिकी समाज का प्रत्येक क्षेत्र शोधमूलक प्रतीत होता है क्योंकि मनुष्य तीव्रगति से अपनी प्रगति करना चाहता है अत: नवीन तथ्यों के आविष्कार हेतु वह शोध का आश्रय लेता है। भारतीय ज्ञान परम्परा के पुरुषार्थ चतुष्टय के अन्तर्गत इहलौकिक और पारलौकिक जगत् का समस्त ज्ञान विद्यमान है। विज्ञान आज केवल मानव के भौतिक सुख,सुविधाओं को प्रदान करने के लिए प्रयासरत है जो क्षणिक हैं जबकि मनुष्य को शाश्वत आनन्द प्रदान करने में विज्ञान भी विफल है। किन्तु संसार में अनेकों तरह के लोग हैं जो भिन्न-भिन्न रूप से वस्तुओं को देखते हैं। वैदिक काल से ही मनुष्य सत्य तथ्य अर्थात् यथार्थ ज्ञान के आविष्कार में लगा हुआ है। इस सन्दर्भ में वैदिक मन्त्रों को उद्धरण के रूप में देखा जा सकता है जिनमें से कुछ निम्न प्रकार से है-

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।

तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये॥ ईश.उप.१५

अत: शोध द्वारा ही अज्ञान रूपी आवरण में ढके हुए सत्य ज्ञान को ज्ञानरूपी आलोक से प्रकाशित किया जा सकता है।

सुष्ठु शोध कार्य के आधार

जैसाकि उपर्युक्त मन्त्र द्वारा बताया गया है कि अज्ञानरूपी अन्धकार के आवरण में ढके हुए सत्य तत्त्व को ज्ञान रूपी प्रकाश से ही प्रकाशित किया जा सकता है। अत: उपनिषत्कार का मत है कि इस सत्यार्थ के प्रकाशन हेतु अन्वेषक को तीन बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए- विद्या,श्रद्धा और उपनिषद्।

विद्या : यहाँ विद्या से तात्पर्य है- प्रयोग पद्धति अथवा 'आर्ट' कहते हैं।

श्रद्धा : श्रद्धा का अर्थ है- कार्य के साथ हृदय का योग।

उपनिषद् : उपनिषद् को 'रहस्य या रहस्यज्ञान ' कहा गया है।

अत: सत्य तत्त्व को ज्ञान के प्रकाश से तभी प्रकाशित किया जा सकता है जब ये तीनों सम्मिलित रूप से अन्वेषक में विद्यमान हों। इसलिए शोधकार्य को सफल और श्रेष्ठ बनाने के लिए ये तीनों अत्यन्त ही आवश्यक होते हैं।

जब तक शोधकार्य की प्रविधि का सम्यक ज्ञान नहीं होगा, शोधकार्य के प्रति श्रद्धा -विषय के साथ हृदय का योग नहीं होगा तक तक शोधविषय का उद्देश्य उद्घाटित नहीं हो पायेगा।

अत: किसी भी वस्तु को जानने की प्रविधि का सम्यक् ज्ञानपूर्वक उसमें श्रद्धाभाव रखते हुए ही यथार्थ को जाना जा सकता है क्योंकि श्रद्धा के बिना सत्य का ज्ञान हो पाना सम्भव नहीं है। भगवद्गीता में कहा भी गया है- श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्।

शोध की परिभाषा

शोध का तात्पर्य है सत्य का प्रकाशन,अज्ञात को ज्ञात करना आदि। और यह स्वत: प्रवाहमान् क्रिया है जिसका आदि तो है किन्तु अन्त नहीं है। शोध भलीभाँति व्याख्या सहित परिकल्पना या समस्या को हल करने की व्यवस्थित तथा तटस्थ प्रकिया है। मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है, अत: वह सदैव जिज्ञासु प्रवृत्ति का रहा है। मनुष्य मस्तिष्क में उत्पन्न प्रत्येक प्रश्न शोध के विषय हो सकते हैं।

शोध शब्द शुध् धातु में घञ् प्रत्यय लगने से निष्पन्न होता है जिसका तात्पर्यार्थ है-यथार्थ विवेचन या यथार्थ का निर्णय करना। 'ज्ञातविषयादज्ञाततत्त्वानामाविष्करणम्'अर्थात् ज्ञात विषय से अज्ञात तत्त्वों का आविष्कार करना ही शोध है। ज्ञानस्याविष्करणम्,उन्नयनं पुन: परीक्षणं च।

शोध की परिभाषा देते हुए विद्वानों ने ने कहा है-

ज्ञान का आविष्कार,उन्नयन और फिर उसकी परीक्षा करना ही शोध है।- फ्रैंसिस रैम्मेल

प्रयत्नपूर्वक अन्वेषण,अनुसंधान अथवा परीक्षण जिसेसे सत्य का अनावरण हो वह शोध है।– क्लीफोर्ड वूडी

नवीन ज्ञान की प्राप्ति के व्यवस्थित प्रयत्न को शोध कहते हैं। रैडमैन- मोरी

कोई भी विद्वत्तापूर्ण शोध ही सत्य के लिए,तथ्यों के लिए,निश्चितताओं के लिए अन्वेषण है।– स्पॉर-स्वेन्स

शोध क्या है? इस विषय में कुछ निम्नलिखित बिन्दुओं को उपस्थापित किया जा सकता है-

शोध के मूलभूत प्रश्न

- जगत् क्या है?
- जगत् में वह क्यों है?
- जगत् में ही क्यों है?
- मनुष्य व जगत् को लाने वाला कौन है?
- मनुष्य और जगत् में क्या सम्बन्ध है?

मनुष्य की इस ज्ञान की पिपासा कभी तृप्त नहीं हुई

फलत: इसी पिपासा ने अनेक भौतिक तथा आध्यात्मिक रहस्यों को तथ्य रूप प्रदान किया।

ज्ञान सम्पदा में वृद्धि हुई

जगत् की कुछ सहज इन्द्रिय गम्य हैं

संसार की वे सभी वस्तुएँ जिन्हें नेत्रों द्वारा देखी जा सकती हैं।

जगत् की कुछ वस्तुएं सहज इन्द्रियगम्य नहीं हैं किन्तु इनके अस्तित्त्व को अस्वीकार भी नहीं किया जा सकता।

यथा-

१. हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।

२. भूत-प्रेत आदि विद्याएँ।

शोध

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर शोध को मुख्यत: दो स्वरूपों में देखा जा सकता है-

शोध

नवीन खोज करना

यह शाश्वत सत्य नहीं हो सकता

उदाहरण के लिए-
पूर्व में विज्ञान ने यह स्वीकार कर लिया था कि पदार्थ का अन्तिम अंश अणु है किन्तु उसने पदार्थ का अन्तिम(न्यूनतम) अंश परमाणु को माना। अत: यह शाश्वत सत्य नहीं हो सकता। इसका आदि तो है किन्तु अन्त नहीं है।

अज्ञात को ज्ञात करना

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
भूत-प्रेत आदि विद्याएँ।
या
पौराणिक मान्यता- चन्द्रालोक में प्राणियों का अस्तित्त्व है। इस पूर्व में अज्ञात विषय को पूर्व में वैज्ञानिकों ने इसे धार्मिकों का अन्धविश्वास मानकर स्वीकार नहीं किया। किन्तु वर्तमान में वैज्ञानिक भी चन्द्रमा पर जाने का प्रयास कर रहे हैं। पाश्चात्यों ने इन पुराणों को पण्डितों की कल्पना का विलास बतलाया और कहा कि भोली जनता को धर्मविश्वासी बनाने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

शोध के सन्दर्भ में उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कुछ बातों पर ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

वस्तुओं को भली-भाँति समझ लेना-

शोध कार्य में किसी भी वस्तु को भलीभाँति परख लेना अत्यन्त आवश्यक होता है अन्यथा सुष्ठु सफलभाव शोध कार्य में नहीं आ सकता है। इस सन्दर्भ में कालिदास के मालविकाग्निमित्रम् ग्रंथ के एक श्लोक को उदाहरण स्वरूप ले सकते हैं-

पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्त:परीक्ष्यान्यन्तरद्भजन्ते मूढ: परप्रत्ययनेय बुद्धि:॥ मालविकाग्निमित्रम्.१.२

अर्थात् पुरानी होने से ही न तो सभी वस्तुएँ अच्छी होती है और न ही नवीन होने से हेय। विवेकशील व्यक्ति अपनी बुद्धि से परीक्षा करके श्रेष्ठ वस्तु को अंगीकार कर लेते हैं। जबकि मूर्ख लोग दूसरों के बताने पर ग्राह्य अथवा त्याज्य का निर्णय करते हैं।

प्रामाणिक होना-

शोधकार्य को अपने विषय से भिन्न नहीं बनाना चाहिए और उसकी प्रामाणिकता भी होनी चाहिए। इस विषय में मल्लिनाथ के कथन को ध्यान में भी रखा जा सकता है-

नामूलं लिख्यते किञ्चिन्नानपेक्षितमुच्यते।

शोध के पर्यायवाची शब्द

शोध के अनेक पर्याय हैं। जैसे-खोज,शोध,अन्वेषण,अनुसंधान,गवेषणा, आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है,अत: ये शोध पर्याय माने गये हैं। आङ्ग्लभाषा में रीसर्च शब्द का प्रयोग किया जाता है। शोध,अन्वेषण,अनुसन्धान,गवेषणा इन सभी पर्यायाओं के भिन्न-भिन्न अर्थ भी हैं जिनका संक्षिप्त उल्लेख निम्न रूप से किया गया है-

शोध-

शोध शब्द शुध् धातु में घञ् प्रत्यय लगने से निष्पन्न होता है जिसका शाब्दिक अर्थ है- '*ज्ञातविषयादज्ञाततत्त्वानामाविष्करणम्*' अर्थात् ज्ञात विषय से अज्ञात तत्त्वों का आविष्कार करना। *यथार्थविवेचनं निर्णयश्च।* अर्थात् वस्तुओं का यथार्थ विवेचन या यथार्थ का निर्णय करना ही शोध है।

अन्वेषण-

अन्वेषण शब्द अनु+एष्+ल्युट् से निष्पन्न होता है। अत: इसका लक्षण है- *अनुपलब्धस्य उपलब्धि:।* अर्थात् अन्वेषण से अभिप्राय है -अनुपलब्ध वस्तुओं की उपलब्धि कराना। जैसे- सांख्य दर्शन में प्रकृति के विषय में कहा गया है- *सौक्ष्म्यात्तदनुपब्धिर्नाभावात्।* अर्थात् सूक्ष्म होने के कारण उसकी अनुपलब्धि है न कि उसके अभाव के कारण। अत: प्रकृति के अस्तित्त्व की सिद्धि सांख्य विषय अन्वेषणपरक ज्ञान से ही सम्भव है।

अनुसन्धान-

अनुसन्धान शब्द अनु+ सम् उपसर्गपूर्वक धा+ धातु में ल्युट् प्रत्यय लगने से निष्पन्न होता है। *'उपलब्धस्य परीक्षणम्'* अर्थात् उपलब्ध सिद्धान्त का पुनर्मूल्यांकन या परीक्षण करना।समयानुसार या युगानुसार उपलब्ध ज्ञान की मौलिकता का प्रदर्शन करना। जैसे- २०० शताब्दी ई. में पतञ्जलि ने यह कह दिया था – *योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:* अर्थात् चित्तवृत्तियों का निरोध ही योग है। उन्होंने कहा योग के द्वारा चित्तवृत्तियों का निरोध करके चित्ता को सभी विषयों से हटाकर एक विषय में स्थिर कर देने से मानसिक बल प्राप्त किया जा सकता है। महाभारतकाल में इसा ज्ञान की महत्ता समझी गयी। इसलिए वेदव्यास जी ने कहा- नास्ति योगसमं बलम्।

गवेषणा –

गवेषणा शब्द गो+ इष्+ धातु में ल्युट् प्रत्यय लगने से निष्पन्न होता है जिसका ' *ज्ञानस्यान्वेषणमित्यर्थ:'* अर्थात् ज्ञान के अनेषण की अभिलाषा ही गवेषणा है। जैसे- ब्रह्म की सत्ता को जानने की उत्कट इच्छा होना। सृष्टि निर्माण के विषय में जब हम जानना चाहते हैं तो उसके निर्माता को भी जानने की जिज्ञासा होती है। केनोपनिषद् को इस सन्दर्भ में उद्धृत किया जा सकता है-

केनेषितं पतति प्रेषितं मन: केन प्राण: प्रथमं प्रैतियुक्त:।

केनेषितां वाचमिमां वदन्ति चक्षु: श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति॥ केन.उप.१.१.

इन्हीं सत्य तत्त्वों को जानने की जिज्ञासा ही गवेषणा है। इस सत्य ज्ञान को जानकर सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म, प्रज्ञानं ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मि,तत्त्वमसि आदि ज्ञान को प्रकाशित किया।

शोध के प्रकार

विद्वानों ने शोध के भिन्न-भिन्न प्रकार स्वीकार किये हैं जिनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण शोध के प्रकार निम्न लिखित हैं-

उद्देश्य की दृष्टि से

शुद्ध शोध (Pure Research)

उदाहरण के लिए-
आइन्सटाइन ने कहा पदार्थ और उर्जा दोनों अभिन्न हैं। यह एक शुद्ध शोध कार्य है।
काल को भवभूति ने निरवधि कहा है- *कालो हि निरवधिः*

प्रायोगिक या क्रियात्मक शोध (Applied Research)

उदाहरण के लिए –
पदार्थ और उर्जा को भिन्न-भिन्न माना गया। यूरेनियम पदार्थ के टूटने से नि:सृत उर्जा से एटम बम बनाया गया।
आधुनिक युग में भी प्राचीन सिद्धान्तों के आधार पर वैज्ञानिक शोधकार्य प्रवर्तमान हैं।

अन्य कुछ विद्वानों के द्वारा उद्देश्य की दृष्टि से शोध के प्रकार को निम्नरूप से भी स्वीकार किया गया है-

काल की दृष्टि से शोध के प्रकार

कुछ विद्वान् काल की दृष्टि से शोध के भेद को अनेक प्रकार के भेदों को स्वीकार किया है जिनका विवरण निम्न प्रकार से द्रष्टव्य है-

काल की दृष्टि से शोध के प्रकार

- ऐतिहासिक शोध (Historical Research)
  - साहित्य,संस्कृति,भाषा,विज्ञान आदि में होने वाले भूत कालिक प्रयत्नों व कार्यों का वैज्ञानिक पद्धति से अन्वेषण करना, जिससे अतीत को वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में समझने की सुविधा हो सके।
- व्याख्यात्मक या वर्णनात्मक शोध (Descriptive Research)
  - समस्या के मूल को समझ कर सरलतम व्याख्या करना, तथ्यों का संकलन,विश्लेषण व मूल्यांकन करना।
    संस्कृत शास्त्रों की सुरक्षा के लिए इस प्रकार का शोध उपयोगी होता है।
- प्रयोगात्मक शोध (Practical Research)
  - उदाहरण-योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:। योग के माध्यम से चित्तवृत्तियों का निरोध करके चित्त को एक विषय में स्थिर करके मानसिक बल में वृद्धि करना।

समीक्षकों की दृष्टि से शोध के प्रकार

समीक्षकों के मतानुसार शोध के विभिन्न प्रकार हैं जो निम्नरूप से द्रष्टव्य हैं-

समीक्षकों के मतानुसार शोध के प्रकार

- तुलनात्मक शोध (Comparative Research)
- सम्पादनात्मक शोध (Editing Research)
- समालोचनात्मक(Critical Research)
- तथ्यानुसन्धात्मक (Experimental Research)
- वस्तुभित्तिक (Objective Research)
- पर्यवेक्षणात्मक (Survey Research)

धन्यवाद